Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Business Management & Quality Assurance(e ISSN 2456-9291) Vol. 1, Issue, 01. 57-60p, April, 2017

National Research & Journal Publication

Review Article

उन्नाव शक्ति के साधनों की क्षेत्रीय औद्योगिक विकास प्रक्रिया में भूमिका एवं औद्योगीकरण के आधार तत्त्व

डॉ सदानंद राय

एसोसिएट प्रोफेसर वाणिज्य

इंदिरा गांधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांगरमऊ उन्नाव उत्तर प्रदेश

सन्दर्भ

क्षेत्रीय स्तर पर कुछ समस्याओं के होते हुए भी स्थानीय कच्चे माल की प्रचुर मात्रा में आपूर्ति, परिवहन व्यवस्था की पर्याप्त मात्रा में सुविधा, विशाल जनसमूह के कारण पर्याप्त श्रमिक आपूर्ति एवं विस्तृत बाजार आदि ने जनपद उन्नाव के औद्योगिक विकास को निश्चित दिशा एवं गति प्रदान की है। उपर्युक्त आधारभूत तत्वों के कारण वर्तमान समय में जनपद उन्नाव में औद्योगीकरण–प्रक्रिया की गति तीव्र है।

Copyright©2017, डॉ सदानंद राय *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

परिचय

प्रायः सभी प्रकार की प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियाँ संयुक्त रूप से एकत्रित होकर उद्योगों के लिए ठोस आधार प्रस्तुत करती हैं, जिनके अनुकूल होने पर मजबूत व विस्तृत औद्योगिक ढाँचे का निर्माण सम्भव होता है। क्योंकि प्रत्येक औद्योगिक संस्थान की अपनी एक निश्चित स्थिति होती है जिसका निकटवर्ती इकाइयों एवं आर्थिक भू–दृश्यावली से सीधा सम्बन्ध होता है। अतः प्रत्येक क्षेत्र में औद्योगिक विकास के लिए कुछ प्रमुख आधारभूत तत्वों की महती आवश्यकता होती है, जिनके आधार पर औद्योगिक प्रतिष्ठान जन्म लेते हैं तथा विकास की ओर उन्मुख होते हैं। इस प्रकार के मौलिक तत्वों में कच्चे माल की उपलब्धता, विद्युत एवं जल आपूर्ति, परिवहन सुविधा, बाजार की दशायें, संचार व्यवस्था, तकनीकी स्तर, श्रमिक आपूर्ति, सरकार की नीतियाँ तथा पूँजी–निर्माण की परिस्थितियाँ आदि प्रमुख हैं। परन्तु खनिज सम्पदा, जलवायु, वन उत्पादन तथा पशुधन भी औद्योगिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। प्रायः ऐसे क्षेत्रों में जहाँ उपर्युक्त मौलिक तत्व एक ठोस आधार को जन्म देते हैं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापन प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, परन्तु इकाइयों का आकार–प्रकार एवं स्वरूप क्षेत्रीय परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होता है।

प्रायः ऐसे क्षेत्रों में जहाँ कृषिगत कच्चे माल की उपलब्धता सहज ही पर्याप्त मात्रा में हो, हल्के, लघु स्तरीय एवं श्रम प्रधान उद्योगों को बढ़ावा मिलता है, परन्तु ऐसे क्षेत्रों में जहाँ खनिज संसाधनों द्वारा कच्चे माल की आपूर्ति की जाती है। प्रायः भारी, विशाल स्तरीय एवं नवीनतम तकनीकी पर आधारित उद्योगों की स्थापना होती है। प्रत्येक विकासशील राष्ट्र में औद्योगिक विकास की दिशा, स्वरूप एवं सम्भावनायें वहाँ उपलब्ध

प्रशिक्षित श्रम, विदेशी मुद्रा, तकनीकी स्तर एवं समाज की क्रय क्षमता से भी प्रभावित होती है।3

अध्ययन क्षेत्र जनपद उन्नाव में स्थानीय स्तर पर खनिजों का अभाव है परन्तु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अध्ययन क्षेत्र में समतल व उपजाऊ विस्तृत भूमि, काँप मिट्टी, विशाल पशु–सम्पदा, विस्तृत वन क्षेत्र एवं उनकी उपज प्राप्ति, जलवायु की अनुकूलता आदि सुविधायें क्षेत्रीय स्तर पर उपलब्ध हैं तथा इन कारकों को उपयोगी स्वरूप प्रदान करने वाला मानव भी भारी संख्या में अपनी उपस्थिति को दर्शाता है प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों ने संयुक्त रूप से औद्योगिक विकास हेतु मौलिक तत्वों को ठोस आधार प्रदान किया है। क्षेत्रीय स्तर पर कृषि, पशु व वनों से कच्चे माल की आपूर्ति की जाती है, जिन पर कुल औद्योगिक विकास का लगभग 85 प्रतिशत भाग निर्भर करता है। परिवहन एवं संचार व्यवस्था तथा जल आपूर्ति की मात्रा को सन्तोषजनक कहा जा सकता है। यद्यपि विद्युत वितरण व्यवस्था, पूँजी निर्माण की दशा तथा शिक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार हुआ है परन्तु फिर भी इन क्षेत्रों में व्यापक सुधार की आवश्यकता महसूस होती है।

अध्ययन क्षेत्र उन्नाव में शक्ति प्राप्ति का मुख्य स्रोत विद्युत है, जिसकी अनियमित एवं अपर्याप्त मात्रा में आपूर्ति एक प्रमुख समस्या है, पूँजी निर्माण की दशायें आर्थिक पिछड़ेपन के कारण सीमित है। अतः क्षेत्रीय स्तर पर कुछ समस्याओं के होते हुए भी स्थानीय कच्चे माल की प्रचुर मात्रा में आपूर्ति, परिवहन व्यवस्था की पर्याप्त मात्रा में सुविधा, विशाल जनसमूह के कारण पर्याप्त श्रमिक आपूर्ति एवं विस्तृत बाजार आदि ने जनपद उन्नाव के औद्योगिक विकास को निश्चित दिशा एवं गति प्रदान की है। उपर्युक्त आधारभूत तत्वों के कारण वर्तमान समय में जनपद उन्नाव में औद्योगीकरण–प्रक्रिया की गति तीव्र है।

उन्नाव शक्ति के साधनों की क्षेत्रीय औद्योगिक विकास प्रक्रिया में भूमिका : उद्योगों के विकास में शक्ति के साधनों की प्रमुख भूमिका रही है, क्योंकि प्रत्येक औद्योगिक इकाई की स्थिति का निर्धारण, वहाँ उपलब्ध ऊर्जा आपूर्ति पर निर्धारित होता है।

जहाँ एक ओर औद्योगिक इकाइयों की स्थिति निर्धारण में शक्ति के साधनों की आपूर्ति स्पष्ट प्रभाव छोड़ती है, वहीं दूसरी ओर औद्योगीकरण की दिशा एवं स्वरूप को भी निर्धारित करती है। प्रायः उन क्षेत्रों में जहाँ शक्ति के साधन सस्ती दर पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं, विभिन्न प्रकार की औद्योगिक इकाइयों की स्थापना व विकास का कार्य प्रारम्भ हो जाता है।

जनपद बदायूं में शक्ति के साधनों के विकास का सम्बन्ध मुख्य रूप से क्षेत्रीय औद्योगीकरण प्रक्रिया से रहा है क्योंकि 1945 से पूर्व अधिकांश लघु इकाइयाँ कोयला शक्ति से चालित थी तथा उस समय तक विद्युत आपूर्ति नगण्य थी। कोयला बाह्य क्षेत्रों से आयात किये जाने के कारण महंगा पड़ता था। अतः औद्योगिक विकास प्रक्रिया की गति मन्द थी। जनपद बदायूं में विद्युत शक्ति का आगमन सन् 1933 में हुआ। परन्तु 1945 के पश्चात सीमित मात्रा में विद्युत आपूर्ति बढ़ जाने के कारण नगरीय केन्द्रों में लघु व मध्यम आकार वाले औद्योगिक इकाइयों की स्थापन प्रक्रिया को बल मिला।

सन् 1975 तक आते–आते विद्युत आपूर्ति की मात्रा में काफी सुधार हुआ। खनिज तेल की आयातित मात्रा बढ़ गयी। विद्युत वितरण प्रणाली का विस्तार नगरों से ग्रामीण अंचलों की तरफ होने लगा। परिणामस्वरूप नगरीय क्षेत्रों के

साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी औद्योगिक इकाइयों (विशेषतया खाण्डसारी एवं गुड़ उद्योग से सम्बन्धित) की स्थापन प्रक्रिया में बढ़ोत्तरी हो गयी परन्तु विद्युत आपूर्ति माँग से कम रहने लगी।

सन् 1985 से अब तक विद्युत वितरण व्यवस्था, उपकेन्द्रों, विद्युत उत्पादन एवं उपभोग में व्यापक सुधार हुआ है परन्तु लघु, कुटीर एवं विशाल तीनों ही प्रकार के उद्योगों तथा कृषि व अन्य क्षेत्रों में विद्युत माँग में कई गुना बढ़ोत्तरी हो गयी है। परिणामस्वरूप विद्युत उत्पादन अपर्याप्त रह जाने के कारण विद्युत कटौती, अनियमित व अपर्याप्त विद्युत आपूर्ति का सिलसिला प्रारम्भ हो गया है जो पिछले चार–पाँच वर्षों से और गहराता जा रहा है। इस भीषण विद्युत संकट के परिणामस्वरूप औद्योगिक विकास प्रक्रिया को भारी क्षति हो रही है। इस विकास प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए इस 'विद्युत संकट' पर नियंत्रण करना अति आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर व लघु उद्योगों के विकास के लिए सौर्य ऊर्जा एवं 'गोबर गैस को व्यवहारिक रूप प्रदान करना आवश्यक है।

जनपद बदायूं में औद्योगिक विकास का मुख्य आधार स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चा माल ही है। अतः औद्योगिक क्षेत्रों में प्रयुक्त अधिकांश कच्चा माल का भार तैयार रूप में आने पर घट जाता है, फलतः इस प्रकार के उद्योग, कच्चे माल की आपूर्ति के क्षेत्रों के निकट स्थापित किये गये हैं। परन्तु कच्चे माल को औद्योगिक केन्द्रों तक लाने के लिए सस्ते तथा तीव्रगामी परिवहन के साधनों की आवश्यकता है ताकि परिवहन लागत कम से कम आये। सन् 1950 से पूर्व क्षेत्रीय स्तर पर कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों का ही प्रमुख स्थान था। ये सभी केन्द्र कच्ची व पक्की सड़कों द्वारा आन्तरिक क्षेत्रों से जुड़े थे। यहाँ कार्यरत निम्न स्तरीय उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चा माल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो जाता था, साथ ही इनमें निर्मित वस्तुओं की खपत भी स्थानीय थी।

अतः कुछ वस्तुओं क अतिरिक्त अधिकांश वस्तुओं के लिए परिवहन की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। परन्तु रेल एवं पक्की सड़कों के उत्तरोत्तर निर्माण के कारण जनपद उन्नाव के आन्तरिक क्षेत्र तो जुड़ते ही गये, साथ ही साथ दिल्ली, लखनऊ, बरेली, मुम्बई, अलीगढ़, गजरौला, मुरादाबाद, पंजाब, जम्मू–कश्मीर, मथुरा, आगरा, देहरादून एवं जयपुर आदि नगरों व क्षेत्रों से जनपद उन्नाव का सीधा सम्बन्ध स्थापित हो गया, फलतः क्षेत्रीय स्तर पर उद्योगों की स्थापना और विकास को बल मिला क्योंकि बाह्य क्षेत्रों से कच्चे माल व मशीनों के आयात की सुविधा बढ़ गयी तथा दूसरी ओर यहाँ के औद्योगिक उत्पादन का बड़ा भाग बाह्य क्षेत्रों को भेजा जाने लगा।

नगरीय क्षेत्रों तथा उनके निकटवर्ती भागों के औद्योगिक उत्थान में बाजार महत्वपूर्ण कारक रहा है क्योंकि बाजार की भौगोलिक स्थिति एवं उसके स्वरूप पर ही औद्योगपति का लाभांश निर्भर करता है। उत्पादन लागत एवं लाभांश का कम या अधिक होना, बाजार की निकटता एवं उसके स्वरूप पर आधारित है। बाजार में वस्तुओं की माँग बढ़ने पर औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि होती है। अतः व्यापार एवं विपणन, औद्योगिक समाज एवं व्यापार के मध्य कार्यरत प्रणालियाँ हैं, जो मानव समूह, परिवहन, पूँजी,माँग एवं आपूर्ति द्वारा प्रभावित होती हैं जनपद उन्नाव की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में बसी होने के कारण यहाँ कृषि कार्य प्रधान व्यवसाय है।

औद्योगिक विकास पर व्यापारिक प्रभावः उद्योगों के विकास में बाजार केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि यह उद्योग से सम्बन्धित उत्पादन एवं उपकरणों, कच्चा माल, कृषि सम्बन्धी विभिन्न आवश्यक वस्तुओं के क्रय–विक्रय केन्द्र

होते हैं। यह व्यापारिक केन्द्र मण्डी भी कहलाते हैं। औद्योगिक विकास से सम्बन्धित सभी प्रकार के निर्णय, योजनाओं तथा अन्वेषण का कार्य बाजार की दशाओं पर आधारित है। समर्थ बाजार औद्योगिक विकास की अनुकूल दशायें प्रस्तुत करता है।

जनपद उन्नाव एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्राथमिक उत्पादन से सम्बन्धित क्रियाओं के साथ–साथ कृषि आधारित उद्योगों का विकास भी हुआ है। स्वतन्त्रता से पूर्व एवं बाद की व्यापारिक व बाजारीय दशाओं में बहुत अधिक अन्तर आ जाने के कारण औद्योगिक उत्पादन में भी परिवर्तन आया है।

जहाँ स्वतन्त्रता से पूर्व कृषक, श्रमिक तथा समाज के अन्य वर्गों की आय न्यूनतम थी, क्रय क्षमता बहुत कम थी, पूँजी निर्माण की दशायें सीमित थी, फलतः बाजार में वस्तुओं की माँग लघु स्तर तक सीमित थी। परिणामतः बाजार की दशायें अधिक अनुकूल न होने के कारण समस्त औद्योगिक उत्पादन कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों तक ही सीमित था, उत्पादन की मात्रा कम थी। वहीं स्वतन्त्रता के पश्चात विभिन्न वर्गों की आय व क्रय क्षमता में वृद्धि ने, बाजार में विविध प्रकार की वस्तुओं की माँग को बढ़ा दिया, कृषि क्षेत्र से विस्तृत बाजार प्राप्त होने लगा ।

फलतः उद्योगों के आकार व संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही तथा कुटीर उद्योगों का स्थान लघु व मध्यम आकार वाले उद्योगों ने ले लिया। चीनी एवं खाण्डसारी, मैन्था, आलू चिप्स, साबुन, रासायनिक खाद, खाद्य तेल, रासायनिक पदार्थों का विनिर्माण आदि उद्योगों से सम्बन्धित इकाइयों के उत्पादन एवं संख्या में हुई वृद्धि में बाजार की सक्रिय भूमिका रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुचनान, आर0ओ0,'सम रिफ्लेक्शन्स ऑन एग्रीकल्चर ज्योग्राफी, जनवरी, 1959
2. क्लार्क, सी0, 'दि कण्डीशंस ऑफ इकनोमिक प्रोग्रेस, लन्दन, 1951
3. चिब, एस0एस0, दिस ब्यूटीफुल इण्डिया – उत्तर प्रदेश, एल0 एल0 पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 1978
4. चौधरी, एस0पी0आर0, 'लैण्ड एण्ड स्वाइल, नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली, 1966
5. क्रिस्टालर, डब्ल्यू, 'द सेन्ट्रल प्लेस इन साउदर्न जर्मनी, 1933
6. चटर्जी, एस0पी0, 'नेशनल एटलस ऑफ इण्डिया –फिजियोग्राफिक रीजन्स, प्लेट 41 नेशनल एटलस आर्गेनाइजेशन, कलकत्ता, 1957
7. चौधरी, एम0आर0, 'इण्डियन इण्डस्ट्रीज डेवलपमेन्ट एण्ड लोकेशन, ऑक्सफोर्ड, 1970
8. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ यूनाइटिक प्राविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, वाल्यूम – 15, बदायूँ, 1907
9. इस्टाल, आर0सी0 एण्ड बुचनान, 'इण्डस्ट्रियल एक्टिविटी एण्ड इकोनोमिक ज्योग्राफी, लन्दन, 1977
10. गोयल, एस0, ज्योग्राफिकल बेसिस ऑफ फोरेस्ट इण्डस्ट्रीज इन उत्तर प्रदेश, थीसिस (अनपब्लिस्ड), आगरा यूनिवर्सिटी, 1969
11. केनरी, एच0डी0 एण्ड वाटनवी टीव रू 'इण्टरनेशनल कोम्पेरी जन्स ऑफ द स्ट्रक्चर ऑफ प्रोडक्शन इकोनोमेटरिका, अक्टूबर,1958
12. 'कुरूक्षेत्र', ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, जुलाई, 2004
13. कुरियान जी0, 'इण्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट इन इण्डिया इन्डिपेन्डेन्सश, 1958